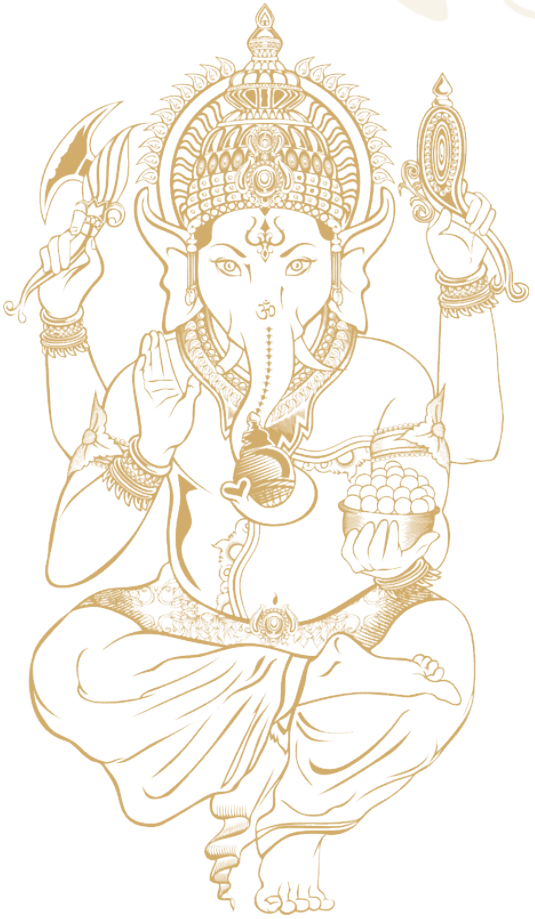

Mr.

14 Mar 2026

01:39 PM

Nalagarh

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121626001**

तिथि 14/03/2026 **समय** 13:39:00 **वार** शनिवार **स्थान** Nalagarh **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:30
अक्षांश 31:03:00 उत्तर **रेखांश** 76:48:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:22:48 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	00:44:03 घं
वेलान्तर	00:09:13 घं
सूर्योदय	06:34:38 घं
सूर्यास्त	18:29:56 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा
योग	परिघ
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	भो-भोजराज
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

सूर्य 3वर्ष 6मा 17दि

सूर्य

14/03/2026
30/09/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	14/03/2026
गुरु	07/08/2026
शनि	20/07/2027
बुध	25/05/2028
केतु	30/09/2028
शुक्र	30/09/2029

योगिनी

संकटा 4वर्ष 8मा 23दि

संकटा

14/03/2026
06/12/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	14/03/2026
भ्रामरी	06/12/2026
भद्रिका	16/01/2028
उल्का	17/05/2029
सिद्धा	06/12/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:40:52	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			29:31:36	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि	1.70	आत्मा	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			02:06:47	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	सम राशि	1.30	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	15:01:38	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	सम राशि	1.10	पुत्र	भ्रातृ	क्षेम
बुध	व	अ	16:25:55	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	सम राशि	0.98	भ्रातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			20:52:45	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.31	अमात्य	धन	प्रत्यारि
शुक्र			15:34:53	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	उच्च राशि	1.25	मातृ	कलत्र	साधक
शनि		अ	09:07:22	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.41	ज्ञाति	आयु	साधक
राहु			14:41:55	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु			14:41:55	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

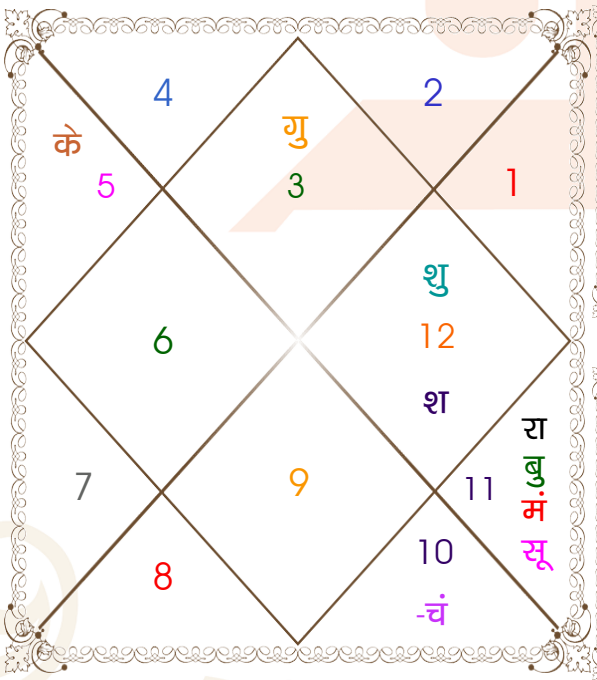

चन्द्र कुंडली

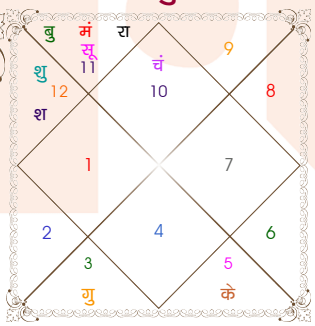

नवमांश कुंडली

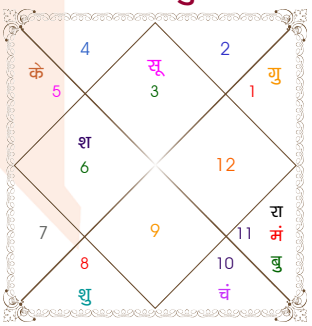

सर्वाष्टकवर्ग

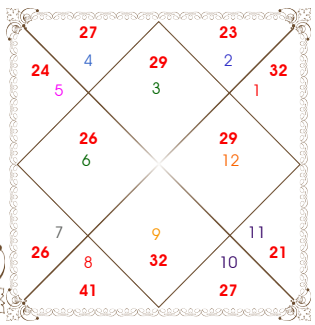

दशमांश कुंडली

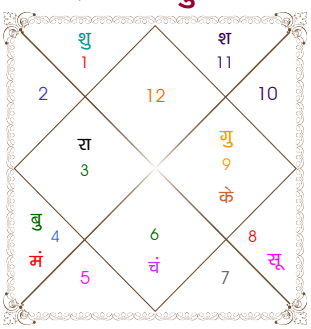

नक्षत्रफल

आप उत्तराषाढा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, गण मनुष्य नाड़ी अन्त्य, योनि नकुल तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का आरम्भ "भो" या "भौ" अक्षर से होगा यथा- भोलानाथ आदि।

आप अपने समाज में सम्मानीय व्यक्ति माने जाएंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। आप सात्विक गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा विषम से विषम परिस्थितियों का भी शान्त भाव से सामना तथा समाधान करेंगे। आप अपने जीवन काल में भौतिक तथा सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। धन सम्पति से आप हमेशा युक्त रहेंगे। तथा इसका अभाव आपके पास कम ही रहेगा। साथ ही विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आप ड़ान अर्जन करेंगे। एवं कई कार्यों को करने में भी निपुण रहेंगे। इस प्रकार एक विद्वान के रूप में आप समाज में पूर्ण सम्मानित तथा प्रसिद्ध रहेंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आप प्रारम्भ से ही विनयशील रहेंगे तथा आपकी विनम्रता से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। धार्मिकता का भाव भी आपके अन्तर्मन में विद्यमान रहेगा। तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं का आप श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा तथा कई लोगों से आपकी मित्रता रहेगी। इन से आप पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे। आप में नैसर्गिक रूप से कृतड़ता का गुण रहेगा। अतः अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को स्वीकार करेंगे तथा मन से उन के प्रति आभार भी प्रकट करेंगे। इसके साथ ही आप समाज के सभी वर्गों के मध्य लोकप्रिय भी रहेंगे। एवं उनकी सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

शरीर से आप स्थूल तथा लम्बे रहेंगे। तथा हमेशा शूरवीरता के भाव से युक्त रहेंगे। साथ ही अपने अधिकाँश कार्यों को आप साहस पूर्वक सम्पन्न करके उनमे सफलता अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त झगड़े तथा विवाद आदि कार्यों से शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप प्रायः सफलता ही प्राप्त करेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

दानशीलता के भाव से आप हमेशा युक्त रहेंगे। तथा समय समय पर यथा शक्ति इस प्रवृति का पालन करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप एक दयालु व्यक्ति भी होंगे तथा दीन दुःखियों के प्रति इस भाव का पालन करते हुए उन्हें प्रयत्न पूर्वक अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके सभी कार्य अच्छे रहेंगे। अन्य लोगों को भी आपके कार्यो से सन्तुष्टि रहेगी। आप एक वैभव शाली पुरूष होंगे। तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। आप स्त्री तथा पुत्रों से युक्त होकर हमेशा सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा। परन्तु कभी कभी आप अन्य जनों के समक्ष अपनी अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोऽभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड़ित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका कद ऊँचा रहेगा तथा मस्तक विशालता से युक्त रहेगा। आपकी आँखे अत्यन्त सुन्दर होंगी तथा आप का स्वरूप सुन्दरता से युक्त रहेगा। आपके कंठ एवं कान दीर्घता से युक्त रहेंगे। संगीत के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा संगीत शास्त्र के आप अच्छे ज्ञाता रहेंगे। ठंड से आपको काफी व्याकुलता की अनुभूति होगी तथा इसे सहने में आप असमर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी एवं

इसका अनुपालन करने के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहेंगे। इसके साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। समाज में आप एक सम्मानीय पुरूष समझे जाएंगे। तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी। आप अवसरानुकूल अल्प मात्रा में क्रोध का प्रदर्शन भी करेंगे। आपके मन में काम भावना की भी प्रवलता रहेंगी। आप सभी जनों से स्नेह तथा सम्मान का भी व्यवहार रखेंगे। किसी से घृणा या द्वेष करना आपकी प्रवृति के विरूद्ध होगा। लेखन कार्य के प्रति रूचि रहने के कारण आप काव्य सृजन में सफलता तथा ख्याति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आप में पूर्ण उत्साह के भाव का भी अभाव रहेगा तथा यदा कदा अपनी लोलुपता की प्रवृति का भी आप प्रदर्शन करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप नित्य अपनी स्त्री तथा पुत्र सहित परिवार के लालन पालन में व्यस्त रहेंगे। तथा वाहयरूप से धर्माचरण में भी रत रहेंगे। कमर भी पतली होगी। आप शीर्घ ही अन्य जनों की बातों से सहमत हो जाएंगे। तथा उसका पालन करने के लिए भी उद्यत होंगे। आप एक आलसी पुरूष भी होंगे तथा शनैः शनैः अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे। परन्तु आपका भाग्य प्रबल रहेगा तथा अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्य द्वारा सिद्ध होंगे। यात्रा तथा भ्रमण आदि करने में आपकी विशेष रूचि रहेंगी। आपका अधिकाँश समय यात्राओं तथा घूमने फिरने में व्यतीत होगा। शारीरिक बल का आप में अभाव नहीं होगा। आपके बल से अन्य लोग भी प्रभावित रहेंगे। आप असम्भव कार्यो को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने की इच्छा करेंगे। जहाँ जनसामान्य जनों के विषय में भी नही सोचेंगे। आप अपने स्वभाव में कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे। एवं जीवन में वात से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे। साथ ही सब गुणों से भी आप सर्वदा सम्पन्न रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने पारवारिक जनों के मध्य विशेष सम्मान अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप प्रायः स्त्री के वश में रहेंगे एवं उसके कथनुसार ही सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे। विविध शास्त्रों का भी आपको ड़ान रहेगा। तथा समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा व्याप्त रहेंगी। इसके साथ ही अफवाह आदि फैलाने के कार्य में भी आप निपुण रहेंगे। सुन्दर स्त्रियां हमेशा आपकी प्रसंसक रहेंगी। माता के प्रति आपका विशेष स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं पुत्र सन्तति से भी आप सुशोभित रहेंगे। धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा

इससे प्रायः सम्पन्न ही रहेंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार आप इसका प्रदर्शन तथा पालन करते रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संवधी की सम्पति का सुख पनर्वक उपभोग करेंगे। तथा समाज में अन्य जनों के प्रति भी आप चिन्तन शील रहेंगे। सलाह देने या मंत्रणा करने की भी आपमें निपुणता रहेगी। आप कई प्रकार के कार्यों को करने में भी दक्ष रहेंगे तथा बन्धु वर्ग के आप पालन करने वाले होंगे। इसके अतिरिक्त आप वीरता के गुणों से भी सुसम्पन्न रहेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

संगीत के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा। तथा इसका आपको अच्छा ज़ान रहेगा आपका शरीर कान्ति तथा लावण्यता से सर्वदा सुशोभित रहेगा। तथा आपके भावना सौन्दर्य वृद्धि में निरन्तर सहायक सिद्ध होगा। आप में काम वासना के भाव की भी प्रवलता रहेगी साथ ही आप परिवार की परम्परा का अनुकरण करते हुए उसे आगे बढाने में निरन्तर तत्पर रहेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा देवता एवं व्राहमणों के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा तथा सेवा की भावना रहेगी। साथ ही आप धार्मिक कृत्यों का भी आप अनुपालन करने के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगे। कभी कभी आप अन्य जनों के समक्ष अपनी अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। जिससे अन्य जन आपसे असन्तुष्ट से रहेंगे। आपके मन में दया तथा करूणा की भावना हमेशा विद्यमान रहेगी। शारीरिक बल से भी आप परिपूर्ण रहेंगे तथा स्वबल से महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। नाना प्रकार की कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे। तथा विविध शात्रों का ड़ान प्राप्त करने में सफल रहेंगे। एवं समाज में एक विद्वान के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे। आपका शरीर सुकान्ति से सुशोभित रहेगा। तथा आपके द्वारा अन्य बहुत से लोग भी सुख की प्राप्ति करेंगे।

समाज में आप एक आदरणीय तथा सम्माननीय व्यक्ति समझे जाएंगे। आप सर्व प्रकार के वैभव एवं ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। आपकी आँखें बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही निपुणता तथा ख्याति को अर्जित करेंगी। आपका शारीरिक स्वरूप गौर वर्ण से युक्त होगा तथा नगर वासियों पर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुलयोनि में जन्म लेने के कारण आप में परोपकार की भावना नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा अपने इस कार्य को आप दक्षता से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील रहेंगे। अपने इन कार्यों से आपको समाज में पूर्ण सम्मान तथा ख्याति प्राप्त होगी। आप एक धनवान पुरूष होंगे। तथा अन्य धनाढ्य लोग भी आप के प्रति सम्मान का भाव प्रदर्शित करेंगे। साथ ही आप उच्चकोटि के विद्वान तथा कई संस्थाओं के प्रमुख भी होंगे। माता पिता के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे। तथा आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा सेवा का भाव रखेंगे।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र

होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए वैशाख मास चतुर्थी नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिहं राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों रोहणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर एवं सिहँ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधानी रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक चिन्ता, शारीरिक परेशानी, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं अथवा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको नृसिहँ भगवान की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंचधातु, तिल, कम्वल, तेल, चर्मपादुका आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्य पात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा

सम्पन्न करवाने चाहिए ऐसा करने से आपकी समस्त मानसिक तथा शारीरिक परेशानियां दूर होंगी। तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम होगा एवं शुभ प्रभावों में पूर्ण वृद्धि होकर अन्यत्र लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।